अनोखे पक्षी / रजनी अरोडा

बच्चो, तुमने आसमान में उड़ते हुए छोटे-बड़े कई तरह के पक्षी देखे होंगे। छोटे पक्षी तो फुर-फुर आसानी से इधर-उधर उड़ लेते हैं। लेकिन दुनिया में कई बड़े आकार के भी ऐसे पर्सी हैं, जो बहुत तेज गति से उड़ते हैं और लंबी दूरियां तय करते हैं। यहां हम तुम्हें कुछ बहुत ही तेज गति से उड़ने वाले बिग बर्ड्स के बारे में बता रहे हैं।

तेज गति से उड़ने वाले जिया जड़र्स

स्पर-विंग गूस

इसे दुनिया के सबसे बडे हंस प्रजाति के पक्षी रूप में जाना जाता है। एडल्ट स्पर-विंग गुस, लगभग 75 सेंटीमीटर लंबा और 4.8 किंग्रा वजन का होता है। 142 किमी या 88 मील प्रति घंटा की स्पीड से उड़ने की क्षमता के कारण इसकी गिनती दुनिया की सबसे तेज उड़ने वाले पक्षियों में होती है। यह मुख्यतः उप सहारा अफ्रीका के झीलों, नदियों के पास जमीन पर बनाए घोंसलों में

रहते हैं। 🗱



स्पाइन-टेल्ड स्विफ्ट

171 किलोमीटर (105 मील) प्रति घंटा की स्पीड से उडान भरने वाले स्पाइन-टेल्ड स्विफ्ट, दुनिया की सबसे तेज उड़ने वाली बर्ड्स में से एक है। काले रंग के स्विफ्ट बर्ड के गले पर सफेद रंग के बाल होते हैं, इसलिए इसे 'व्हाइट थ्रोटेड नीडल टेल' के नाम से भी जाना जाता है। ये पक्षी मध्य एशिया, साइबेरिया, पूर्वी और उत्तरी ऑस्टेलिया में पाए जाते हैं। जमीन पर उतरने के बजाय ये अपना अधिकांश जीवन उड़ते हुए और पहाड़ों पर बनाए अपने घोंसले में बिताते हैं। ये आसमान में उड़ने वाली छोटी बर्ड्स और कीड़े खाते हैं। 🗱

पिनटेल डक

इस पक्षी के पूंछ के पंख सिरे पर पिन की तरह लंबे और पतले होते हैं, इसीलिए इसे 'प्वॉइंटी डक' भी कहा जाता है। पिनटेल डक के पंखों का फैलाव 23.28 सेंटीमीटर तक हो सकता है। यह 105 किमी या 65 मील प्रति घंटा की स्पीड से उड़ सकते हैं। ये यूरोप, एशिया और उत्तरी अमेरिका के देशों में बड़ी

तादाद में पाए जाते हैं। 🗱

अपनी दांतदार चोंच के कारण ये पक्षी 'मरगस सरेटर' नाम से भी जाने जाते हैं। ये 51.62 सेंटीमीटर तक



लंबे हो सकते हैं। इसके पंखों का फैलाव 70.86 सेंटीमीटर तक हो सकता है। यह डक 129 किमी या 80 मील प्रति घंटा की स्पीड से उड सकता है। रेड चेस्ट डक पानी के अंदर डाइव लगाकर काफी देर तक रह सकता है। ये पक्षी मछलियां, कीडे और मेंढक आदि खाते हैं। यह डक मुख्य रूप से उत्तरी अमेरिका, ग्रीनलैंड, यूरोप और एशिया के देशों में मिलते हैं। *

मील प्रति घंटा की स्पीड से उड सकते हैं बड़े आकार के समुद्री बत्तखों में ऐडर ऐडर डक मुख्य रूप से उत्तरी अमेरिका, डक को भी शामिल करते हैं। उत्तरी यूरोप और पूर्वी साइबेरिया के उत्तरी भाग में पाए जाते हैं। * ये डक 50 सेंटीमीटर से भी अधिक लंबे हो सकते हैं

और 113 किमी या 70 रेड चेस्ट डाइविंग डक

कैनवास बैक डक

यह उत्तरी अमेरिका के देशों में पाया जाने वाला सबसे बडे आकार का डाइविंग डक है। यह लगभग 80 सेंटीमीटर तक लंबा हो सकता है और इसके पंखों का फैलाव 48.56 सेंटीमीटर तक हो सकता है। यह 124 किमी या 77 मील प्रति घंटा की स्पीड से उड सकता है। इनकी खासियत है कि ये अपने साथियों के साथ झुंड में वी-शेप बनाकर आकाश में उड़ते हैं। ये जलीय वनस्पति खाते हैं। सर्दियों के दौरान यह मिसीसिपी नदी के आस-पास के गर्म इलाकों में माइग्रेट करते हैं। 🤻



जानकारी / नयनतारा

कब की जाती है मेडे कॉल

बच्चो, पिछले दिनों अहमदाबाद में हुए प्लेन क्रैश की दुर्घटना के बाद न्यूज चैनल्स, न्यूज पेपर्स और सोशल मीडिया पर तुम बार-बार एक शब्द 'मेडे कॉल' के बारे में सुन या पढ़ रहे होगे। क्या तुम जानते हो यह कॉल क्या होती है और कब की जाती है?



च्चो, बीते 12 जून 2025 को अहमदाबाद (गुजरात) में एयर इंडिया का एक एयरो प्लेन एआई 171 उडान भरने के कुछ पलों बाद ही क्रैश हो गया था। प्लेन क्रैश से कुछ समय पहले प्लेन के कैप्टन यानी पायलट ने एयर ट्रैफिक कंट्रोलर से संपर्क करते हुए 'मेडे कॉल' जारी की थी। जानो 'मेडे

कॉल' के बारे में। कहां से आया टर्म 'मेडे': यह शब्द फ्रेंच भाषा प्रचलित 'म'आइडर' से बना है, जिसका अर्थ होता है 'हेल्प मी' यानी मेरी मदद करो। चुंकि यह फ्रेंच फ्रेज सनने में 'मेडे'

जैसा प्रतीत होता इसलिए 'म'आइडर' की जगह 'मेडे' प्रचलित हो गया। अब तो हवाई उड़ान के दौरान आई इमरजेंसी से संबंधित 'मेडे' शब्द को दिनया के लगभग सभी देशों के लोग समझते हैं। प्रायः हर देश और हर कंपनी की विमान सेवा में इमरजेंसी मैसेज के लिए 'मेडे कॉल' टर्म का ही यूज किया

ऐसे हुई मेडे कॉल की ऑफिसियल शुरुआतः इस शब्द की शुरुआत 1923 लंदन के क्रायडन एयरपोर्ट के वरिष्ठ

उसे अस्पताल ले जाना पडा। असल में

दोनों दवाओं का रंग एक जैसा था। मझे

रेडियो अधिकारी फ्रेडरिक मोकफोर्ड के आग्रह पर हुई और 1948 में इसे आधिकारिक (ऑफिसियल) बना दिया गया।

क्यों कहते हैं इसे मेडे कॉल: प्लेन की उड़ान के दौरान जब पायलट को लगता है कि एयरो प्लेन खतरे में है, तो वह 'मेडे, मेडे, मेडे...' पुकारता है। यह

संकट में दिया गया रेडियो सिग्नल है। टैफिक नियंत्रण करने वाले 'मेडे कॉल' को सनते हैं. वे जान जाते हैं कि एयरो प्लेन संकट में है और उसे मदद की जरूरत है।

तब करते हैं मेडे कॉलः मेडे कॉल एक आपात संदेश (इमरजेंसी मैसेज) होता है। इसे एयरो प्लेन का पायलट उस समय करता है, जब विमान किसी गंभीर संकट में हो और यात्रियों या क्रू मेंबर्स की जान को खतरा हो। विमान का इंजन फेल होना, खराब मौसम, नेविगेशन सिस्टम की विफलता. किसी यात्री की अचानक तिबयत खराब हो जाना या पायलट द्वारा हवाई जहाज का नियंत्रण खो देना... इस तरह की आपात कालीन परिस्थितियों में

तुम्हारे लिए नई किताबें / विज्ञान भूषण

जानवरों-पक्षियों पर कविताएं

कई तरह के जानवरों और पक्षियों को देखते होगे। कुछ और पक्षी तुमने

चिडियाघर यानी जु में देखे होंगे। लेकिन उनमें से कई जानवर और पक्षी ऐसे होंगे, जिनके बारे में तुम बिल्कुल नहीं या बहुत कम जानते हो। हाल में ही दो ऐसी नई किताबें छपकर आई हैं, जिनमें अनेक पालतू और जंगली पशु-पक्षियों के बारे में कविता के माध्यम से जानकारी दी गई है। 'कितने प्यारे

जानवर हमारे' और 'कितने प्यारे पंछी हमारे' शीर्षक वाली इन किताबों में प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल ने सरल और प्यारी कविताओं में देश-दुनिया में पाए जाने वाले कई पशु-पक्षियों के आकार, उनकी शारीरिक

च्चो, तुम अपने आस-पास विशेषताओं, उनके स्वभाव, उनके निवास और उनसे जुड़ी कहावतों की जानकारियां दी हैं। मोर कविता में वह लिखते हैं, 'राष्ट्रीय पक्षी

फ्रिगेट बर्ड

समुद्री जीवों में फ्रेगाटा

परिवार की पांच प्रजातियों में

से एक है फ्रिगेट बर्ड। ये पक्षी 153

किमी (95 मील) प्रति घंटा की स्पीड से उड

सकते हैं। ये आकार में काफी बड़े होते हैं. जिससे

ये न तो पानी में आसानी से तैर पाते हैं और न ही

जमीन पर चल पाते हैं। लेकिन ये बहुत तेजी से

समुद्र में डाइव लगाकर मछलियों, जेली फिश,

स्क्विड जैसे समुद्री जंतुओं का शिकार कर लेते

हैं। नर फ्रिगेट पक्षी के गले में लाल थैली होती है,

जिसे वह मादा फ्रिगेट को आकर्षित करने के लिए

फुलाता है। फ्रिगेट बर्ड्स, ज्यादातर मध्य और

उत्तरी अमेरिका के देशों में पाए जाते हैं। *

भारत का/कहा मोर ही जाता/सुंदर पंखों के कारण है/मन को बेहद भाता।' तो कविता में लिखते हैं, 'इधर-उधर चहका करतो/लगता प्यारी-प्यारी/गौरैया अब संख्या में कम/चिंता बढी हमारी।' इसी तरह भाल कविता में वे लिखते हैं, 'बजा डुगडुगी मदारी/इसको नाच नचाता/भालू खुश

होकर बच्चों के/मन को है बहलाता।' ऐसी ही बहुत सी कविताएं इन दोनों किताबों में संकलित हैं। इन कविताओं को पढ़ने में तुमको सच में बहुत मजा तो आएगा ही, ढेरों जानवरों, पक्षियों के बारे में काफी कछ जानने को भी मिलेगा। 🛪

किताबें: 'कितने प्यारे जानवर हमारे' और 'कितने प्यारे पंछी हमारे **लेखक:** डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल, **मूल्य:** 150 रुपए (प्रत्येक) प्रकाशक: सूर्य भारती प्रकाशन, दिल्ली



- . आईसीसी की ताजा रैंकिंग के अनुसार विश्व की बेस्ट वन-डे महिला बैटर कौन बनी हैं? 2. हाल ही में किस देश ने भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपना सर्वोच्च नागरिक सम्मान प्रदान किया है?
- 3. हरियाणा के वर्तमान राज्यपाल का क्या नाम है? 4. रातापानी टाइगर रिजर्व किस प्रदेश में स्थित है?
- 5. दूध की शुद्धता मापने के लिए किस यंत्र का प्रयोग किया जाता है?
- 6. ज्ञानपीट पुरस्कार किस क्षेत्र में दिया जाता **है**?
- 7. विश्व जनसंख्या दिवस कब मनाया जाता है?
- 8. 'हिंद खराज' नामक पुस्तक के लेखक कौन हैं?
- 9. हर वर्ष निकाली जाने वाली रथ यात्रा का संबंध किस मंदिर से है? 10. हमारा पड़ोसी देश श्रीलंका किस महासागर के बीच में स्थित है?

बच्चों, जीके विवज-१५९ का उत्तर बालभूमि के अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा। सही जवाब देने वाले बच्चों के नाम भी प्रकाशित किए जाएंगे। तुम अपने जवाब हमें balbhoomihb@gmail.com पर मेल कर सकते हो।

जीके क्विज-158 का उत्तर : 1.महेंद्र सिंह धोनी, 2.ऋषभदेव, 3.जम्मृ-कश्मीर, 4.छत्तीसगढ़, 5.कार्बन डाइऑक्साइड, 6.केराटिन, 7. 1576 ई., 8. 1 जुलाई, 9.प्लैटिनम, 10.बछेंद्री पाल

जीके क्विज-158 का सही उत्तर देने वाले: स्विप्नल-रायगढ़, ममता-सीतापुर, लालिमा-गरियाबंद, राम-राजनांदगांव, सौम्या-रायगढ़, कबीर-हिसार, मीनाक्षी-रायपुर, पंकज-भोपाल, अनुज-बेमेतरा, प्रियंका-बिलासपुर, कुश-महासमुंद

जीतू को आई समझ

जीतू का पढ़ाई में बिल्कुल मन नहीं लगता था। लेकिन खेलने में खब मजा आता था। अकसर अपने मम्मी-पापा से बिना बताए वह स्कल बंक करके पार्क में बच्चों के साथ क्रिकेट खेलने लगता। लेकिन एक दिन शूज पॉलिश करने वाले एक बढे बाबा ने उससे कुछ ऐसा कहा कि जीतू ने मन लगाकर पढ़ाई करने का संकल्प कर लिया।

कहानी

सरस्वती रमेश

तु के मम्मी-पापा मजदुरी करते हैं। सुबह-सुबह जीत की मम्मी उसे तैयार कर स्कूल भेज देती हैं। उसके बाद पापा के साथ वह भी काम पर चली जाती हैं। जीत का पढाई में बिल्कल भी मन नहीं लगता। उसका स्कूल जाने का भी मन नहीं करता है। स्कूल के पास ही एक बडा-सा मैदान है। वहां ढेरों बच्चे खेलते रहते हैं। उनको देखकर जीतू का भी मन करता है कि वह भी स्कल जाने के बजाय उन बच्चों के साथ खेले।

एक दिन जीतू स्कूल जा रहा था। मैदान में बच्चे क्रिकेट खेल रहे थे। तभी गेंद उसके सामने आ गिरी। खेल रहे बच्चे चिल्लाने लगे, 'गेंद फेंको.. गेंद फेंको।' जीतू ने गेंद उनकी तरफ फेंक दी फिर कुछ देर वहीं खड़े होकर उन बच्चों का खेल देखने लगा। थोड़ी

देर बाद क्रिकेट खेल रहे बच्चों के पास जाकर जीतू बोला, 'मुझे भी अपने साथ में क्रिकेट खेलने दो।

'ठीक है, वहां फील्डिंग पर लग जाओ।' बैटिंग कर रहे लड़के ने इशारा करते हुए जीतू से कहा। जीत खश हो गया। उसे खेलने में बडा मजा आ रहाँ था। खेलते-खेलते दोपहर हो गई। बच्चे अपने-अपने घर जाने लगे। जीत भी बस्ता टांग कर अपने घर वापस

अगले दिन से जीतू स्कूल जाने के लिए घर से निकलता लेकिन स्कल जाने के बजाय मैदान में बच्चों के साथ खेलने लगता। खेलने में उसे बड़ा मजा आता। अब न पढाई का प्रेशर था, न होमवर्क करने की चिंता। रोज-रोज स्कूल बंक कर बच्चों के साथ खेलना उसकी आदत बन गई।

मैदान के बगल वाली सड़क पर एक बुढ़े

बाबा जुते पॉलिश करते थे। आते-जाते जीत् उन्हें रोज देखता। एक दिन जीतू खेलने के बाद घर जा रहा था। उसने देखा कि बूढ़े बाबा किताब पढ़ रहे हैं। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह उनके पास जाकर बोला, 'बाबा, आप तो जूते पॉलिश करने का काम करते हैं। आज आप किताब क्यों पढ़ रहे हैं?'

'क्योंकि मैं जान गया हूं कि पढ़ाई-लिखाई जीवन में बहुत जरूरी है।' बाबा ने कहा। 'कैसे जान गए... ऐसा क्या हुआ?' जीत ने हैरानी से पूछा।

'बेटा, मैं सिर्फ दूसरी कक्षा तक पढ़ा हूं। अक्षर पहचान लेता हूं। लेकिन अच्छी तरहे पढ़ना नहीं जानता। मेरे पोते को कुछ दिनों से खांसी आ रही थी। दवा का नाम ना पढ़ पाने के कारण मैंने उसे खांसी की दवा पिलाने की बजाय घाव साफ करने वाली दवा पिला दी, जिससे मेरे पोते की तिबयत और बिगड़ गई।

समझ नहीं आया। अगर मैं पढा-लिखा होता तो यह गलती कभी ना होती। दवा का नाम पढ़ लेता। अब मेरा पोता ठीक हो गया है। मैंने उसका दाखिला स्कूल में करा दिया है और अपने लिए भी किताबें खरीद लाया हूं। खाली समय में अब मैं भी किताबें पढ़ता है।' बुढ़े बाबा ने बताया। 'लेकिन मुझे तो पढ़ना बिल्कुल पसंद

<mark>न</mark>हीं है। पढ़ाई के लिए तो बहुत मेहनत करनी पड़ती है, बहुत दिमाग खपाना पड़ता है। इसलिए मैं स्कूल जाने की <mark>ब</mark>जाय यहां पार्क में खेलने चला आता हूं।' जीतू ने बताया। जातू को बात सुनकर बाबा ने उस

समझाते हुए कहा, 'बेटा, मेहनत और लगन से पढाई-लिखाई करने वाले आगे चलकर अच्छे और सफल इंसान बनते हैं। देश के लोगों की सेवा करते हैं। सेना में भर्ती होते हैं, पुलिस बनते हैं, डॉक्टर या

इंजीनियर बनते हैं। पढ़-लिखकर बहुत-से अच्छे काम किए जा सकते हैं, जो बिना पढ़े-लिखे संभव नहीं है। तमको स्कल जरूर जाना चाहिए।

बाबा की बातें सुनकर जीतू सोच में पड़ गया। उसके मम्मी-पापा को भी पढ़ना नहीं आता। इसलिए उन्हें धूप में मजदूरी करनी पड़ती है। अगर स्कूल नहीं जाएगा, तो वह भी अनपढ़ रह जाएगा। जरूरत पड़ने पर दवाइयों के नाम भी नहीं पढ़ पाएगा। ऐसे तो बड़े होकर उसे भी मजदूरी जैसा कोई काम करना पड़ेगा। जीतू को अपने स्कूल बंक करने की आदत पर बहुत पछतावा होने लगा। 'बाबा, अब मैं रोज स्कूल जाऊंगा। मन लगाकर पढ़ाई करूंगा। बड़ा होकर डॉक्टर बनूंगा।' जीतू ने जोश के साथ बूढ़े

'शाबाश! बहत बढ़िया। खुब पढ़ो.. आगे बढ़ो।' बाबा ने जीतू के सिर पर हाथ रखकर कहा। 🗱

कविता सिराज अहमद

मेडे कॉल किया जाता है। 🧚



चला सैर को बंटी बंदर बहुत दिनों था घर के अंदर कैब फोन से कर ली बुक दुक दुक दुक- दुक दुक दुक विंडो के फिर पास बैठकर पैर चढाकर एक पैर पर बाहर करता लुक लुक लुक रुक रुक रुक- रुक रुक रुक दिखा रास्ते में एक हाथी था उसका बचपन का साथी हाल-चाल पूछा फिर रुक दुक दुक दुक- दुक दुक दुक दिनभर करके सैर सपाटा खाते-पीते मौज उड़ाता लौटा घर को पढ़ते बुक

रंग भरो-178

रंग भरो-178 में दिए गए चित्र को तुम लोगों ने बहुत अच्छे से रंगकर हमें भेजा। उनमें से चुना गया सबसे अच्छा चित्र हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं। उसे रंगकर भेजने वाले बच्चे के चित्र के साथ कुछ अन्य बच्चों के नाम और चित्र भी प्रकाशित कर रहे हैं।





धमतरी, अंकित-गुना, दिनेश-करनाल, लक्ष्य-कोरबा











बच्चो, यहां दो बिल्लियों का

प्यारा-सा ब्लैक एंड व्हाइट चित्र दिया गया है। तुम इस चित्र को मनचाहे रंगों से रंग कर हमें भेजो। जिस बच्चे का चित्र सर्वश्रेष्ट होगा, उसे हम बालमूमि में प्रकाशित करेंगे। चित्र के साथ अपनी फोटो, अपना और शहर का नाम हमें इस पते पर भेजो-संपादक-फीचर, हरिभूमि कार्यालय, १२९, ट्रांसपोर्ट सेंटर, पंजाबी बाग, पश्चिमी दिल्ली, नई दिल्ली-११००३५ या ई-मेल आईडी balbhoomihb@gmail.com ₩ मेल करो।

रंग भरो



रुक रुक रुक- रुक रुक रुक

